# एन. चंद्रशेखरन नायर की कहानियों में वर्णित जीवन

**पंकज कुमार**
(जूनियर रिसर्च स्कॉलर)
अंग्रेज़ी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद, 500007
pkmaurya222@gmail.com
9807135737 / 8726286446

**शोध सारांश**

केरल में हिंदी को समृद्ध करने वालों की सूची में एन. चंद्रशेखरन एक महत्वपूर्ण नाम है जिन्होंने हिंदी में कविता, कहानी, नाटक, लेख आदि में मौलिक लेखन कार्य किया है। एन. चंद्रशेखरन के दो कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं जिनमें वर्णित जीवन के विभिन्न रूपों को इस शोध आलेख के माध्यम से दिखाया गया है। कम मगर विविधता से परिपूर्ण उनकी कहानियों में जीवन के बहुत से चित्र सजीव हो गये हैं। उनकी कहानियों में प्रेमचंद के आदर्शवादी जीवन के साथ 'कफन' की पीडा विद्यमान है।

दक्षिण में हिंदी के सच्चे सेवक एन. चदेशखर की जन्मभूमि और कर्मभूमि दोनों ही केरल रही है। प्रारंभिक शिक्षा केरल में प्राप्त करने के बाद इन्होंने एम.ए. की शिक्षा बी.एच.यू. व पीएच–डी की डिग्री बिहार यूनिवर्सिटी से प्राप्त की। शुरुआती जीवन में इन पर गाँधी का जो प्रभाव पड़ा वह इनके साथ ताउम्र बना रहा। ये प्रभाव इनके साहित्य साधना में भी आया। गाँधीवादी नायर ने हिंदी को अन्य भारतीय भाषाओं की प्रतिद्वंद्वी के रूप में नहीं देखा। अपितु वो भाषाओं में भावात्मक एकता को स्थापित करने के पक्षधर रहे और राष्ट्रवादी नायर के लिए हिंदी एकता को स्थापित करना ही मूल उद्देश्य था।

नायर जी ने हिंदी को संपन्न करने का कार्य संस्थागत स्थापना पत्रिका ने प्रकाशित अनुदित लेखन के साथ मौलिक लेखन के माध्यम से किया। इनके द्वारा कविता, नाटक, कहानी जीवनी, निबन्ध और आलोचना जैसी सभी विधाओं में मौलिक लेखन कार्य किया गया। 1980 में केरल हिंदी साहित्य परिषद, तिरुवन्नतपुरम् की स्थापना के माध्यम से इन्होंने इसको और गति प्रदान की। डॉ नायर की कला, साहित्य और हिंदी की सेवा को देखते हुए इन्हें 2020 में 'पद्मश्री' सम्मान से नवाजा गया। विशेषतः हिंदी की उत्कृष्ट सेवा को देखते हुए 2015 में 'विश्व हिंदी सम्मान' प्रदान किया गया।"[1] नायर के बारे में स्वामी विशानन्द ने ठीक ही कहा है–

**"उत्तर दक्षिण बीच स्नेह का जिसने सुन्दर सेतु बनाया**
**ऐक्य सूत्र सधीनकारणी हिंदी का संसार सजाया**
**हिंदी सेवा प्रतीक को**
**मेरा है शत–शत अभिनन्दन।"[2]**

'देवयानी' जैसा प्रौढ नाटक व 'हिमालय गरज रहा है' जैसी राष्ट्रीयता से ओत प्रोत कविता लिखने वाले नायर के दो कहानी संग्रह 'हार की जीत' (1964), 'प्रोफेसर और रसोइया' (1974) प्रकाशित हुए, जिनमे विविधता से परिपूर्ण कुल 17 कहानियाँ संग्रहित हैं।

'हार की जीत' नाम से हिंदी में दो रचनाकारों सुदर्शन और कथा सम्राट प्रेमचंद की कहानियाँ भी बहुत प्रसिद्ध है परन्तु नायर की यह कहानी कहीं से भी उनसे कम नहीं जान पड़ती है । कहानी स्त्री–पुरुष जीवन मूल्यों को अपनी विषयवस्तु बनाती है । पुरुषवादी मनोविज्ञान और चरित्र कहानी को गति देते हैं । कहानी कर्णाला के शकी राजा और उसकी पतिव्रता पत्नी का जीवन वर्णन है । लेखक इस कहानी के माध्यम से भारतीय आदर्शवादी स्त्री का जीवन उकेरते हैं । जिसके लिए पति द्वारा त्यागा जाना भी उसको पथभ्रष्टा नहीं बनाता । इन सबके बाद भी नायिका कहती है– "महाराज तो मेरे लिए परमेश्वर सदृश है । इस उम्र में उनके अतिरिक्त और किसी की छाया तक मेरे हृदय–मंदिर में नही पड़ी है । पुण्य से ही वे मुझे प्राणनाथ के रूप में मिल गये ।"[3] भारतीय नारी का जीवन हमेशा से कहानी की विषयवस्तु रहा है, जिसमें उसका दुत्कार, बंधन, संघर्ष, समर्पण, निष्ठा आदि चित्रित होता है। यह कहानी में भी उसी ढर्रे में चलती है जिसमें सामाजिक अपमान के बाद भी विद्रोह की ज्वाला नही फूटती है । शायद यह स्त्री जीवन की सबसे बड़ी विसंगति है । जिसको नायर ने भी उसके हाल पर ही छोड दिया है । जोकि कटु मगर स्त्री जीवन यथार्थ भी है ।

'चमार की बेटी' चौदह वर्षीय काशी की ऐसी प्रतिभा संपन्न कवयित्री 'कांति' की कहानी है जो समाज की विषबेल फैलने नहीं देती । बेमेल विवाह जैसा विषय कथा सम्राट प्रेमचंद के रचना संसार में भी बहुतायत में आया है, 'नया विवाह' कहानी और 'निर्मला' उपन्यास के बेमेल विवाह की कथा हिंदी पाठकों ने अवश्य सुन रखी होगी । कहानी दलित जीवन की पीड़ा को उस समय आवाज देती है जब हिंदी में दलित विमर्श जैसा कोई विमर्श था ही नहीं । अर्थ और जाति की भयावहता से पटा पड़ा ये भारतीय समाज उसे आत्महत्या तक पहुँचा देता है । यह जीवन की कटुता ही तो है जिस काशी में मरने मात्र से सब तरते हैं वहाँ रहने वाले दलित आज तक नही तरे । कहानी जिस मार्मिकता से बनारस के जीवन चित्रों को उकेरती है कही न कही उनका बी.एच यू. में अध्ययन के दौरान जीवन का यथार्थ अनुभव ही है । एक ही स्थान पर दो भिन्न छोर के जीवन दर्शन कहानी में हो जाते हैं ।

नायर जी की एक अन्य कहानी 'कान्ह गायब हो गया है' भी दीपक तले अँधेरे का वर्णन करती है । धर्म का बेजा इस्तेमाल कैसे एक चित्रकार को तोड़ देता है? कैसे धार्मिक जीवन जीने वाला व्यक्ति अंत में निराशा को पाता है? कहानी का मुख्य कथ्य है । एक धार्मिक व्यक्ति जो कि धार्मिक संस्थाओं से मिले पुरस्कार के लिफाफे को इस भरोसे के साथ देखता है, "देखो तो इसे खोलना मत हिफाजत से रखो । न जाने कब इसे खोलने की जरूरत पड़े ।"[4] अंत में दर्ज पाँच सौ की जगह पच्चीस ही पाता है और बेटी की इज्जत भी गंवाता है, और क्या ही विद्रूपता होगी जीवन में । धार्मिकता सदैव से ही शोषण का जरिया रही है जिसको डॉ. नायर ने सफलता से रेखांकित किया है । कहानी को पढ़ते हुए मार्क्स अनायास ही याद आ जाते हैं और उनकी उक्ति 'धर्म एक अफीम हैं कानो में गूंजने लगती है ।

प्रेमचंद ने व्यवस्था के मारे घीसू–माधव का चित्रण जिस तरीके से कफन कहानी में दर्ज किया है वैसी ही कुछ दरिद्रता का हृदयविदारक वर्णन नायर जी ने 'भवोति अम्मे' कहानी में किया है । एक महिला, जिसकी चार बेटियाँ हैं, उसको जीवन ने इतनी धोबी पछाड़ मारी है कि वह सामान्य मानवीय व्यवहार भी नहीं कर पाती है । गुस्से में अपनी बेटी के सीने में लात मारने को भी उतारू हो जाती है । लेखक उसका वर्णन कुछ इन शब्दों में करते हैं– "वाह री भवोति अम्मा । किस धातू की तू बनी है? तू उस जाति की तो नहीं है जो शिंशपा वृक्ष के नीचे वैदेही की रखवाली किये बैठी थी? अथवा नाक कान से हाथ धोये, धूल उडाती, बिललाती शूर्पनखो वाली के रुधिर में से उत्पन्न हुई है ।"[5]

जीवन की परेशानियों ने उसे इंसानों की टोली से भी बाहर कर दिया है । उसकी रग–रग में समाई यह वेदना कहानी में आँसू बन कर टपक पड़ती है । व्यक्ति और समाज की विभिन्न परतों को जिस तरह से कहानी ने छुआ है उसने इस कहानी के समाजशास्त्रीय अध्ययन की माँग को आगे बढ़ाया है ।

एक अन्य कहानी 'आप का नाराणीयम्' भी भूख और गरीबी का वृतांत है, जोकि सदियों से चली आ रही लोकोक्ति 'भूखे भजन न होए गोपाला' को चरितार्थ करती है । लेखक की पत्नी का यह कथन बताता है भूखे के जीवन में पहले क्या जरुरी है– "आपका नारायणीयम् आया है । अब अक्सर रोज आया करता है । कुछ खा के ही उठेगा । नियम–सा हो गया है । हाँ सुनिए एक दिन उसने कहा कि उसका गुरुवायुर जाना अच्छा नहीं है ।"[6] जीवन का सत्य यही है आदर्श पर यथार्थ हमेशा ही भारी पड़ता रहा है । जीवन मे पेट एक कटु यथार्थ है और अध्यात्म एक आदर्श ।

'प्रोफेसर और रसोइया' संपन्न और विपन्न के बीच की विडम्बना को रेखांकित करती हुई कहानी है । जिसके पास सब कुछ है वह कुछ खा नहीं सकता है क्योंकि रोग उसके संगी साथी हो गये हैं । वहीं दूसरी ओर रामू रसोइया का जीवन है जो खा तो सकता है पर उसके पास खाने को नहीं है । रामू के जीवन मरण को ये पक्तियाँ आसानी से उद्घाटित करती हैं– "ओफ दुनिया में कितनी अच्छी–अच्छी चीजें हैं पर उन करोडों अच्छी चीजों से आपका क्या वास्ता! हाँ बापूजी, आप तो जरा देखिए... जो भी चीज़ मिले उसे मैं खा लूँगा । सॉप को भी खा जाऊँगा, अगर उलटे वह हमें काटने न दौडे । चार दिन से कुछ न खाया, बस, तो कुछ न बिगड़ा । देखिये, मैं तीर की तरह दौड सकता हूँ... ऊँचे–फून्चे पेड पर चढ सकता हूँ ।... हमें मांसाहार अथवा फलाहार से क्या मतलब? हमे तो जीना है और जब मरना है, तब बस मर ही जाना है ।"[7] कहानी आपके आस–पास से सीधा मिलन सा जान पड़ती है । आज से आधे शताब्दी पहले लिखी गयी यह कहानी अपने विषय के कारण आज भी प्रासंगिक है । और जब तक जीवन स्तर की ये खाईयाँ पट नहीं जाती तब तक यह कहानी जीवित रहेगी ।

"काठ का कफन" कहानी जीवन की वास्तविकताओं से दो–चार कराने में कोई कसर नहीं छोडती है । मात्तन, मौली और मरियम की यह कथा जीवन के सबसे बड़े सच अर्थात मृत्यु की कथा है । मौत के लिए कफन बेचने वाले को मृत्यु के बाद उपजे अकेलेपन का एहसास तब तक नहीं होता जब तक उसकी अपनी बेटी और पत्नी चले नहीं जाते । जीवन का एक सच ये भी है दर्द नितांत अपना होता है । जीवन उत्सव में अपनों की विदाई की वेला ऐसा यथार्थ है जो किसी भी संवेदनशील व्यक्ति को तोड़ देती है ।

सौन्दर्य स्वरुपा राजलक्ष्मी और स्थापित रुढबद्ध सौन्दर्य प्रतिमानो के हिसाब से बदसूरत कलाकार की कहानी गाथा "अजन्ता का कलाकार" कहानी कहती है की कितने सचो में एक कुरुप सच ये भी है कि प्रेम भी शक्ल और परिस्थिति देख के होता है । वरना दकियानूसी पैमानो पर कुरुप ही सही चित्रकार को ये क्यो सुनना पडता "चम्पे, मेरे सन्दूक से कुछ लेकर इसे दे दे ।" प्रेम और स्नेह के लिए ये रंग, रूप और पूँजीवादी पैमाने हमेशा ही लोगो के बीच दीवारे खीचते आये हैं और अभी भी अनवरत खींच रहे हैं ।

कलयुगी जीवन का साक्षात्कार "अब कलयुग है" में हो जाता है । समाज कितना बदल गया है, लोग उसके पक्ष में रैलिया निकाल रहे हैं जो कि अपनी अध्यापिका का बलात्कारी है । इस कलयुगी समाज में भगवान जैसी अघोषित सत्ताओं की भी कोई नहीं सुनने वाला है । इस पृथ्वी लोक में जीवन के सार्वभौमिक नैतिकता और मूल्यो का जो पतन हुआ है उसके दौर में भगवान को बचाने के लिए भी देवियो को आना पड़ता है । यहाँ कलयुग ऐसी जीवन सत्ता का प्रतीक बन कर आया है जो कि अंधेरे की सत्ता स्थापना करना चाहता है ।

सर्वहारा वर्ग का जीवन–चित्र स्वतंत्रता के बाद की कहानियों में बहुतायत में चित्रित हुआ है, ऐसे ही जीवन को कथ्य बनाती दो कहानियाँ हैं । पहली "यह खेल" और दूसरी है, "कलाकार रामू" । एक तो अपनी गरीबी की वजह से मौत को प्राप्त होता है । दूसरा जी तोड़ मेहनत करने के बाद भी एक सामान्य जीवन, जिसमें नमक–रोटी चल सके उसको भी नहीं पा पाता है । धंधे बदलना उसकी पसद नहीं मजबूरी है । थक हारकर वो हाथ फैलाने को मजबूर हो जाता है ।

"बाबूजी, क्षमा कीजिए, मैं आपको तफलीफ देने आया हूँ । दो हफ्ते से मैं बीमार रहा था! घर में बीवी–बच्चे सब बीमार हो गये। दवादारू कराने को ..."[8]

चित्रकार नायर ने अपनी कहानियों में भी कई प्रकार के जीवन चित्र खींचे हैं और उनमें कई रंगों का प्रयोग उनकी कलात्मक अभिवृत्ति को दिखाता है । उनकी कहानियों में जीवन के फूल भी है और शूल भी । जिसको बखूबी सजाने का काम नायर जी ने किया है । दलित–सवर्ण, स्त्री–पुरुष, बूढ़े–जवान, गरीब–अमीर, धर्म–अधर्म, शासित–शासक आदि सभी के जीवन आये हुए हैं । इनकी कहानियों में शुरुआती प्रेमचंद का आदर्शवादी जीवन दर्शन है तो वहीं "अब कलयुग है" जैसी कहानियों में यथार्थवादी जीवन दृष्टि मिल जाती है । कहानी में दलित जीवन की दुरुहता का वर्णन है तो स्त्री जीवन की कठिनाइयों का भी । गरीब, बेरोजगारों के जीवन चित्र आयें हैं तो धार्मिक जीवन की विसंगतियों को भी नायर ने स्थान दिया है ।

इस बात पर अवश्य विचार हो सकता है कि किन जीवन मूल्यों को महत्व मिला है? कई जगह उनकी आदर्शवादिता खटक सकती है पर कहानी सिर्फ यथार्थ का पत्र प्रस्तुतीकरण मात्र नहीं है । वह अभिवृत्ति में मौन परिवर्तन का निमित्त भी है और यह प्रेषणीयता नायर जी की कहानियों में विद्यमान है । केवल सत्रह कहानियों के माध्यम से जिस जीवन विविधता से चद्रशेखरन जी रु–ब–रु करातें हैं वह सराहनीय है । ऐसा प्रतीत होता है कि उत्तर और दक्षिण दोनों से जीवन दृश्यों को कहानियों में स्थान देकर गाधीवादी नायर ने गाँधीवादी न्याय किया है ।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

1. http://dmchandrasekharannair.in/
2. स्वामी विशानन्द जी महाराजः चंद्रशेखरन नायर अभिनंदन ग्रन्थ पृ: 20.
3. डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायरः हार की जीत, पृः 28–29.
4. डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर : बहुचर्चित कहानियाँ, पृः 48.
5. डॉ. एन. चन्द्रशेखेरन नायर: हार की जीत, पृ: 31.
6. डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायरः बहुचर्चित कहानियाँ, पृः 90.
7. डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर : प्रोफेसर और रसोइया, पृ:13.
8. डॉ. चन्द्रशेखरन नायरः बहुचर्चित कहानियाँ, पृः 66.